**Increasing losses of SAIL**

931. SHRI NIRMAL CHATTERJEE: Will the Minister of STEEL, MINES AND COAL be pleased to state:

(a) whether Government are aware of the increasing losses being suffered by the SAIL;

(b) if so, what are the details thereof; and

(c) what remedial steps have so far been taken or are proposed to be taken by Government in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF STEEL (SHRI K. NATWAR SINGH): (a) and (b) SAIL incurred losses in 1982-83 (Rs. 105.76 crores) and also in 1983-84 (Rs. 214.53 crores). These losses are likely to be brought down substantially in 1984-85. The main reason for the losses has been that their net realisations remained lower than increases in the costs of production.

(c) To improve financial performance in 1985-86, SAIL steel plants will increase their production of steel from 4.9 million tonnes (estimated) in 1984-85 to 5.4 million tonnes in 1985-86. They will upgrade their technological regimes, improve yields of by products and attain better recovery of waste and secondary arisings, reduce working capital, reduce inventories, optimum captive power generation, better maintenance and increase production of demand oriented products by diversifying product-mix. Efforts are also being made to ensure adequate inputs and of the right quality.

**अधिकतम घाटे वाले औद्योगिक एकक**

932. **श्री शंकर सिंह वाघेला :**
**श्री कैलाश पति मिश्र :**

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय सरकारी क्षेत्र के उन 30 प्रमुख औद्योगिक एककों के नाम क्या हैं जिनमें उनकी स्थापना से अब तक लगातार कुल बिक्री में अधिकतम घाटा रहा है, इन एककों में से प्रत्येक में हुए घाटे का ब्यौरा क्या है तथा इनमें से प्रत्येक एकक में कितनी-कितनी धन राशि निवेश की गई है ; और

(ख) सरकार द्वारा इस संबंध में क्या कार्यवाही की जा रही है तथा प्रत्येक कम्पनी के लिए 1985-86 के लिए क्या लक्ष्य निर्धारित किए जा रहे हैं ?

**वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जनार्दन पुजारी)** : (क) अनुमान है कि माननीय सदस्यों का आशय 31 मार्च, 1984 को प्रत्येक सरकारी उद्यम के संचित घाटे से है । इस आधार पर 31 मार्च, 1984 को इनके संचित घाटे एवं पूंजी निवेश का विवरण संलग्न है ।

(ख) सरकार, इन सरकारी उद्यमों के कार्य-निष्पादन की निरन्तर समीक्षा कर रही है । इनकी वर्तमान स्थिति को बेहतर बनाने के लिए किए गए कुछ उपाय इस प्रकार हैं :—

(1) प्रत्येक उद्यम के कार्य-निष्पादन की जांच करने के लिए अनेक अध्ययन दल गठित किए गए हैं, ताकि अल्पावधिक एवं दीर्घावधिक सुधारात्मक उपाय खोजे जा सकें ।

(2) प्रत्येक तिमाही में सरकारी उद्यमों के कार्य-निष्पादन की नियमित रूप से समीक्षा की जाती है ।

(3) चूंकि प्रमुख परियोजनाओं का कार्य शीघ्र पूरा होना आवश्यक है । अतः सरकार उनके निष्पादन का निरन्तर परिवीक्षण कर रही है ।

(4) सरकार सरकारी उद्यमों की प्रबन्ध-व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं जिनमें कार्मिक, संगठनात्मक ढांचे आदि में यथावश्यक परिवर्तन शामिल हैं, की निरन्तर समीक्षा कर रही है ताकि उनका कार्य-निष्पादन बेहतर बनाया जा सके ।

(5) जहां कहीं औचित्य पूर्ण होने पर संतोलक सुविधाओं और